Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 6, May-2019, ISSN 2230-7540

तक्षशिला विश्वविद्यालय - एक उच्च शिक्षा केंद्र

Shashi Bala Kulshreshtha[1]* Dr. Abhishek Kulshreshtha[2]

[1] Research Scholar, Singhania University, Rajasthan

[2] Lecturer, B.S.A. College, Mathure

शोध सार – *प्राचीन भारतीय शिक्षा और संस्कृति का यदि कोई स्वर्णिम पक्ष है तो वह है। उसकी शिक्षा प्रणाली अथवा शिक्षा व्यवस्था। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति को जगत् शिरोमणि की उपाधि से विभूषित किया गया है। प्राचीन शिक्षा एक ऐसा प्रभावशाली तंत्र थी जिसने तत्कालीन व्यवस्थाओं को न केवल प्रभावी ढंग से चलाया बल्कि उन्हें स्वस्थ एवं सकारात्मक गति प्रदान की। प्राचीन भारतयीय शिक्षा व्यवस्था में तक्षशिला विश्वविद्यालय का विशेष योगदान रहा है। प्रस्तुत शोधपत्र में तक्षशिला विश्वविद्यालय की शैक्षिक व्यवस्था का वर्णन किया गया है। प्राचीन काल में तक्षशिला भारत का मुख्य उच्च शिक्षा केंद्र था। अनेक विश्वविद्यालय के आचार्य वहाँ निवास करते थे। उनके ज्ञान और यश से आकृष्ट होकर हजारों विद्यार्थी दूर से आते थे। यह विश्वविद्यालय तत्कालीन विभिन्न जनपदों के विद्यार्थियों से सदा परिपूर्ण रहता था। त्रयी (वेद), आन्वीक्षिकी (दर्शनशास्त्र), दंड नीति, वार्ता (कृषि, पशुपालन और वाणिज्य), शिल्प, आयुर्वेद, कला, शस्त्र संचालन आदि समस्त विद्याओं के अध्ययन-अध्यापन का तक्षशिला में समुचित प्रबंध था।*

----------X----------

प्राचीन काल में तक्षशिला विश्वविद्यालय महाभारत काल से ही भारत का प्रधान शिक्षा का केंद्र था। यहीं पर धौम्य ऋषि के शिष्य उपमन्यु और उसका साथी आरुणि ने शिक्षा पाई थी। इसके अतिरिक्त काशी, राजगृह, पाँचाल, मिथिला और अवंती से भी छात्र शिक्षा प्राप्त करने आते थे।[1]

श्री कृष्ण गांधार के एक राजा अग्निजीत का लगभग 7 वीं सदी ई. पूर्व ऐतरेय ब्राह्मण में उल्लेख आया है।[2] अग्निजीत का पुत्र स्वर्जित दोनों का उल्लेख शतपथ ब्राह्मण में आया है।[3] बौद्ध साहित्य में गंधार राज नग्रजीत का उल्लेख है। अग्निजीत, स्वर्जित तथा नग्रजित की शिक्षा-दीक्षा तक्षशिला विश्वविद्यालय में हुई थी, ऐसा कुछ लोगों का अनुमान है।[4]

अनुमान है कि पश्चिमोत्तर राज्यों की भाषा शुद्धतम मानी थी। यहाँ संस्कृत भाषा का आदर्श रूप प्रचलित था। ऐसा उल्लेख कौशीतकी ब्राह्मण में हुआ है।[5] यथा -

"तस्मा दुदीच्यिां प्रज्ञाततरा वागुधते-उदन्चै एवं यन्ति वाचं शिक्षितुम्, यो वा तत्त गच्छति, तस्य वा शुश्रुशन्ते।"

निश्चित रूप से यह कथन उसी विश्वविद्यालय क्षेत्र के लिए है। जहाँ पाणिनि जैसा उच्च कोटि का भाषाविद् या वैयाकरण था।[6]

शिक्षा:-

तक्षशिला राजनीति और शस्त्रविद्या की शिक्षा का अन्यतम केंद्र थी। तक्षशिला के स्नातकों में भारतीय इतिहास के कुछ अत्यंत प्रसिद्ध पुरुषों के नाम मिलते हैं। संस्कृत साहित्य के सर्वश्रेष्ठ वैयाकरण पाणिनी गांधार स्थित शालातुर के निवासी थे। उन्होंने तक्षशिला में ही शिक्षा पाई थी। गौतम बुद्ध के समकालीन कुछ प्रसिद्ध व्यक्ति भी वहीं के विद्यार्थी भी रह चुके थे, जिनमें मुख्य तीन सहपाठी कोसलराज प्रसेनजित, मल्ल सरदार बंधुल एवं लिच्छवि महालि; प्रमुख वैद्य और शल्यक जीवक तथा ब्राह्मण लुटेरा अंगुलिमाल। वहाँ के पाठ्यक्रम में आयुर्वेद, धनुर्वेद, हस्तिविद्या, त्रयी, व्याकरण, दर्शनशास्त्र, गणित, ज्योतिष्, गणना, संख्यानक, वाणिज्य, सर्पविद्या, तंत्रशास्त्र, संगीत, नृत्य और चित्रकला आदि का मुख्य स्थान था।

www.ignited.in

गुरूकुल व्यवस्था:-

कुछ विद्वानों का मत है कि तक्षशिला विश्वविद्यालय में अलग-अलग और छोटे-छोटे गुरूकुल होते थे उस समय के गुरूकुलों पर गुरूओं के अतिरिक्त अन्य किसी अधिकारी अथवा केंद्रीय संस्था का कोई नियंत्रण नहीं होता था। कभी-कभी तो एक-एक गुरूकुल में पाँच-पाँच सौ विद्यार्थी होते थे[7] और उनमें विभिन्न विषय अवश्य पढ़ाए जाते होंगे। उनको महाविद्यालय की संज्ञा देना अनुचित न होगा।

जैसा कि उपर्युक्त विवरण से विदित होता है कि तक्षशिला विश्वविद्यालय विद्या का प्रमुख केंद्र था। अनेक जातकों से भी ज्ञात होता है कि ईसा की पहली दो शताब्दियों में भी यह विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा का प्रमुख केंद्र था। धनी विद्यार्थी पूरी शिक्षा का शुल्क पेशगी दे देते थे।

तियाना के अपोलेनियस के अनुसार तक्षशिला में शिक्षा प्राप्त करने के लिए यूनान तक से विद्यार्थी आते थे। इसमें हस्ति विद्या, मृगया, पशुओं की बोली और धनुर्विद्या आदि की भी शिक्षा दी जाती थी।[8]

तक्षशिला विश्वविद्यालय उत्तर वैदिक काल में नगर विश्वविद्यालय के रूप में विकसित हो चुका था। लगभग 1000 वर्षों तक तक्षशिला की ख्याति देश-विदेश में फैलती रही। देश के कोने-कोने से विद्यार्थी यहाँ आकर शिक्षा प्राप्त करते थे। यहाँ वाराणसी, पाटलिपुत्र, राजगृह, मिथिला, उज्जयिनी, चंपा आदि नगरों के विद्यार्थी यहाँ की ज्ञान गरिमा से परिचित होने के लिए आते थे।[9] जातकों में ऐसे पिपासु छात्रों की यात्राओं की अनेक कथाएं भरी पड़ी हैं। भारत के अतिरिक्त मध्य एशिया, अफगानिस्तान, यूनान, सीरिया, फारस आदि देशों में भी बहुसंख्यक विद्यार्थी विशिष्टता विज्ञान की शिक्षा के लिए तक्षशिला का शिष्यत्व ग्रहण करते थे। 7वीं सदी ईसा पूर्व में ही तक्षशिला को उच्च शिक्षा केंद्र के रूप में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हो गई थी।[10]

तक्षशिलाकालीन आचार्य:-

छठीं शताब्दी ईसा पूर्व में सुप्रसिद्ध व्याकरण पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी के स्वप्न यही देखे थे। कुछ दिन बाद मौर्य साम्राज्य के महामात्य तथा 'अर्थशास्त्र' के सुप्रसिद्ध लेखक आचार्य चाणक्य ने भी सूर्य नगर के प्रारंभिक पाठ यही ग्रहण किए थे। बुद्ध के सम-सामायिक राजगृह के सुप्रसिद्ध वैद्य जीवक ने औषधि शास्त्र की शिक्षा यही प्राप्त की थी।[11]

विश्वविख्यात पुस्तक 'पंचतंत्र' के अमर लेखक विष्णु शर्मा को तक्षशिला विश्वविद्यालय ने ही उत्पन्न किया था। जिन्होंने विष्णु गुप्त कौटिल्य के साथ मिलकर मौर्य समाज की स्थापना में योगदान दिया था। महर्षि वहरूचि, कात्यायन और प्रसिद्ध निबंधकार भी इसी विश्वविद्यालय ने तैयार किए थे। विश्वविख्यात आयुर्विज्ञानवेता और विज्ञान की इस शाखा के संस्थापक महर्षि चरक और सुश्रुत तक्षशिला विश्वविद्यालय की ही देन थे।[12]

तक्षशिला विश्वविद्यालय एवं उसकी प्रसिद्धि:-

तक्षशिला विश्वविद्यालय ऐसा प्रकाश स्तंभ था जिसने पूरे भारत में और पश्चिमी तथा दक्षिण पूर्व एशिया और यूरोप को अपने प्रकाश पुंज से भाषित एवं प्रकाशित किया।[13] यहाँ से उत्तीर्ण होते ही विद्यार्थी देश के सर्वोच्च विद्वानों एवं ऋषि मुनियों की गिनती में आ जाता था।[14] इस बात की पुष्टि का ज्ञान जातकों से प्राप्त होता है कि इस काल में बनारस भी शिक्षा का प्रमुख केंद्र था। इसमें अनेक अध्यापक ऐसे थे जो तक्षशिला विश्वविद्यालय से स्नातक थे।[15]

तक्षशिला की कीर्ति का श्रेय उसकी किसी संस्था को न था; बल्कि तक्षशिला के उन शिक्षकों को था जिनके पांडित्य का यश देश-विदेश में व्याप्त था। यह शिक्षक किसी एक विषय अथवा विषय समूह के पूर्व ज्ञाता तथा विशेषज्ञ होते थे। इस प्रकार तक्षशिला में अनेक ऐसे गुरुकुल अथवा विद्यालय थे जहाँ विषयाविशेष की उच्च तथा विशेषाकृत शिक्षा प्रदान की जाती थी।

अतः उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि तक्षशिला की शिक्षा वैयक्तिक रूप में वहाँ के शिक्षकों द्वारा ही संचालित रहती थी। जातकों के अनुसार तक्षशिला के सुविख्यात शिक्षकों के पास 500 विद्यार्थी एकत्रित रहते थे। श्री ए0 एस0 अल्तेकर के अनुसार जातकों द्वारा वर्णित यह संख्या अतिशयोक्ति है तथा एक शिक्षक के संरक्षक में 20 से अधिक छात्र नहीं रहते थे।[16] किंतु यह युक्ति संगत प्रतीत नहीं होती कि एक अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के विशेषज्ञ के पास 20 ही छात्र देश-विदेश से पढ़ने आते होंगे। अतः यह भी अनुमान किया जा सकता है कि परम प्रसिद्ध शिक्षकों के पास 500 या उसके लगभग विद्यार्थी रहते होंगे।[17]

प्राचीन भारत में तो, जैसा कि पहले कई बार देख चुके हैं, यह पद्धति पूर्णतः प्रचलित थी। अतः जातकों के उपर्युक्त कथन सर्वथा असत्य नहीं दिखाई पड़ते। स्वयं डॉ0 अल्तेकर के सुतसाम जातक में वर्णित 103 राजकुमारों का एक शिक्षक के अंतर्गत धनुर्विद्या सीखना संभव माना है।[18] यह शिक्षक

www.ignited.in

भी उनकी सम्मति में, कई सहायकों के द्वारा सम्मिलित था। स्पष्टतः यह बात 103 से अधिक छात्रों के लिए भी लागू हो सकती थी।[19]

पाठ्यक्रम:-

बौद्ध जातकों तेलपत व सेतकेतु से यह भी पता चलता है कि तक्षशिला विश्वविद्यालय में जगत प्रसिद्ध (दिशापाभोक्ख) विद्वान रहते थे। तक्षशिला विश्वविद्यालय में उच्च शिक्षा प्रदान की जाती थी। लगभग 16 वर्ष की अवस्था के विद्यार्थी तक्षशिला पहुंचते थे। जिनकी शिक्षा अवधि 6 से 8 वर्ष तक की होती थी। आचार्य विद्यार्थी के उच्च व सादे जीवन तथा उत्तम आचरण पर ध्यान देता था। श्री एफ. ई. लिखते हैं- तक्षशिला विश्वविद्यालय में पढ़ाई जाने वाले विषयों की सीमा अत्यन्त ही स्पष्ट थी। वेदाचर्या व उससे संबंधित संपूर्ण साहित्य (ब्रह्म ग्रंथ आरण्यक, उपनिषद, शास्त्र, वेदांग आदि) और वेदांत दर्शन का यहाँ विशेष अध्ययन कराया जाता था। पाठ्य विषयों में 18 शिल्पी सम्मिलित थे। इनमें चिकित्सा और शल्य विज्ञान, धनुर्विद्या, युद्ध विज्ञान, ज्योतिष, नक्षत्र विद्या, गणित, व्यापार, कृषि, तंत्र विद्या, सर्पविद्या तथा चमत्कार विद्या प्रधान विषय थे।[20]

जातकों में तत्कालीन उच्च शिक्षा पद्धति का स्पष्ट पता चलता है। जातकों में ब्रह्मदत्त नामक एक राजकुमार की उच्च शिक्षा का वर्णन है, जिससे सामयिक शिक्षा पद्धति पर पूरा प्रकाश पड़ता है। राजकुमार ब्रह्मदत्त बनारस के राजा का पुत्र था। 16 वर्ष की अवस्था में राजा ने अपने पुत्र को एक जोड़ी चप्पल, पत्तों का बना हुआ छाता तथा 1000 मुद्रा देकर तक्षशिला जाने का आदेश दिया।

विदेशी आक्रमण:-

डॉ. ए. एस. अल्तेकर ने कहा है- "यहाँ के खंडहरों से ज्ञात होता है कि यवन, शक और कुषाण काल के प्रारंभ में पुरानी बस्तों का विध्वंस हुआ था और नया नगर बसा था। संभव है इस राजनीतिक उथल-पुथल से नगर की समृद्धि नष्ट हो गई हो जिसका प्रभाव शिक्षा पर भी पढ़ा ही होगा। किंतु इन सभी पर शासकों ने तक्षशिला में प्रांतीय राजधानी अवश्य रखी थी। अतः युद्ध के संहार का प्रभाव भी शीघ्र ही समाप्त हो जाता होगा।"[21]

इन आक्रमणों तथा विदेशी प्रयुत्व में तक्षशिला की क्या दुर्दशा हुई होगी, यह सहज ही अनुमान किया जा सकता है कि इसके खंडहरों की खुदाई से यह स्पष्ट है कि विद्वानों की यह नगरी अनेक बार उजड़ी तथा बसी। खंडहरों के विश्लेषण से यही निष्कर्ष निकलते हैं। ऐसे संकटकाल में तक्षशिला के शिक्षा केंद्र कुछ समय तक अवश्य ही विश्रृंखल हो जाते थे। लेकिन नगरी के पुनरुत्थान के बाद फिर यह नई ज्योति से जगमगाने लगते थे।[22]

यहाँ के शिक्षालयों का गौरव इतना महान् था कि निरंतर भूचाल के बाद भी ये मिट न सके, ना मिटाए जा सके। हाँ, इनके स्वरूप में कुछ परिवर्तन अवश्य हुए जो कि अपरिहार्य थे। फारसी - संसर्ग तथा आधिपत्य के कारण भारत की राष्ट्रीय लिपि 'ब्राह्मी' तक्षशिला से निष्कासित हुई। यूनानी कला कौशल भी तक्षशिला में संभवतः सिखाये जाने लगे थे। यहाँ के पाठ्य विषयों के 18 शिल्पों में यूनानी शिल्प कला भी सम्मिलित थे।[23] लेकिन तक्षशिला का रंग-रूप अधिकतर भारतीय रहा। अपनी मूल मातृभूमि से भारतीय यूनानी लगभग विच्छिन्न से हो गए। फलतः उनकी सभ्यता और संस्कृति यूनान की अपेक्षा भारत से ही अधिक प्रभावित रही। इस प्रकार तक्षशिला में यूनानी प्रभाव विशेष न पढ़ सका।

तक्षशिला का नवनिर्माण:-

शकों तथा कुषाणों के पास कुछ ऐसे संस्कृति की बातें न थी जिन्हें तक्षशिला को सीखना होता। सांस्कृतिक क्षेत्र में उन्होंने भारत की अधीनता ही स्वीकार की और इसलिए तक्षशिला के आंतरिक स्वरूप में इन विजेताओं के कारण कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन लक्षित न हुआ। आचार्य दीपंकर ने कहा है- तक्षशिला विश्वविद्यालय ऐसा प्रकाश स्तंभ था जिसे पूरे भारत और पश्चिमी तथा दक्षिण पूर्वी एशिया और यूरोप को अपने प्रकाश पुंज से भाषित एवं प्रकाशित किया।[24]

भौगोलिक, व्यापारिक एवं राजनैतिक स्थिति:-

तक्षशिला भारत के उत्तरी पश्चिमी सीमा पर स्थित है। प्राचीन काल में यह झेलम, सिंधु और हारों द्वारा भुरा और मरगला-हजारा पहाड़ियों द्वारा समृद्ध और सुरक्षित नगर था।[25] यह एक प्रमुख केंद्र था। जो भारत, मध्य एशिया और पश्चिम के देशों को जोड़ने का व्यापारिक दृष्टि से तक्षशिला का विशेष महत्व था। यह तीन व्यापारिक मार्गों का मिलन स्थल था। संभवतः जिस प्रकार से इसकी भौगोलिक स्थिति थी, उसने इसे व्यापारिक और राजनैतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण नगर के रूप में विकसित किया।

www.ignited.in

प्रमुख व्यापारिक मार्ग था। अतः नवीन संस्कृतियों, विचारों से संपर्क ने जिज्ञासा, ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में नवीन खोजों को प्रोत्साहन दिया।[26]

1. उत्तर पश्चिम सीमा पर स्थित होने के कारण तथा व्यापारिक मार्ग पर स्थित होने के कारण प्राचीन संस्कृति की उत्कृष्टता के प्रति आकर्षण ने पश्चिमी और मध्य एशिया के विद्वानजनों को भारत आने के लिए आकृष्ट किया। तक्षशिला सीमांत प्रदेश था, इस भौगोलिक स्थिति ने विदेशी अध्येताओं को भारत आने के लिए प्रेरित किया।

2. यह प्रदेश सिंधु झेलम हारो नदियाँ द्वारा सिंचित था, अतः निश्चित रूप से यह उपजाऊ क्षेत्र रहा। प्लूटार्क, प्लीनी, स्ट्रेबो व व्हेनसांग ने यहाँ की समृद्धि और भूमि की चर्चा की है। अतः स्पष्ट है कि विद्वानों के चिंतन मनन और ज्ञानवर्धन हेतु पर्याप्त समय मिलता होगा। उन्हें अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने हेतु चिंता करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती होगी।

तक्षशिला आकर अध्ययन करने वाले विद्यार्थी जब पुनः अपने देश वापस आते होंगे तो तक्षशिला की समृद्धि और शिक्षा-प्रणाली की प्रशंसा अन्य व्यक्तियों को बता कर भारत आने के लिए प्रेरित करती होगी।

तक्षशिला की बढ़ती हुई प्रसिद्धि ने सुदूर भारत के विद्वानों को भी आकृष्ट किया और वह भी अध्ययन-अध्यापन हेतु तक्षशिला में आकर बस गए। तक्षशिला में निरंतर राजनैतिक उतार-चढ़ाव का वातावरण बना रहा जिसके फलस्वरूप हलचल रही जो निम्नवत् है-

1. एक सदी ईसा पूर्व सी थियन या शकों का आधिपत्य हुआ। एक शताब्दी ईसा पूर्व कुषाणों ने यहाँ अपना अधिकार कर लिया।[27] दो सदी ईसा पूर्व में इंडोबैक्ट्रियन का शासन रहा।

2. छः सदी ईसा पूर्व यहाँ पार्सियन का आधिपत्य रहा।[28]

3. ईसा पूर्व 327 में सिकंदर ने भारत विजय की कामना से हिंदू कुश को पार करके निकाई नगर पहुँचा, जहाँ तक्षशिला के शासक आम्भी ने उसे बहुमूल्य उपहार दिए और भारत आने का निमंत्रण दिया। 326 ईसवी में सिकंदर तक्षशिला पहुँचा। इस प्रकार तक्षशिला यूनानियों के प्रभाव में आया। तत्पश्चात् मौर्य वंश ने यहाँ शासन किया।

4. इतना सब कुछ राजनैतिक परिवर्तन और युद्ध होने के बावजूद तक्षशिला में राजाओं और प्रजा के सहयोग से शिक्षा-प्रणाली को कोई आँच नहीं आयी। बल्कि नवीन संस्कृति और विचारों ने यहाँ की शिक्षा प्रणाली को समृद्ध ही किया।

उपर्युक्त समस्त कारणों व परिस्थितियों ने तक्षशिला को एक विश्व प्रसिद्ध विश्वविद्यालय के रूप में विकसित होने और विश्व में अपना अस्तित्व और पहचान बनाने में अपना योगदान दिया।

1. अतः कहा जा सकता है कि सातवीं शताब्दी ईसा पूर्व में तक्षशिला एक शिक्षा केंद्र के रूप में अपनी पहचान बना चुका था।[29]

2. उत्तर वैदिक काल में भी तक्षशिला एक नगर के रूप में विकसित हो चुका था और विद्वानजनों का ज्ञान चर्चाओं का प्रमुख केंद्र भी था। देश के कोने-कोने से विद्यार्थी यहाँ शिक्षा ग्रहण करने आते थे।

3. ईसा पूर्व छठी शताब्दी में बौद्ध धर्म के उदय के बाद इसकी ख्याति में और वृद्धि हुई। इसी विश्वविद्यालय में यूनानी और भारतीय दार्शनिक पारस्परिक संपर्क में आए। जिन्होंने एक दूसरे के सिद्धांतों को प्रमाणित किया। कौशल शासक प्रसेन्नजीत, मौर्य सम्राट चंद्रगुप्त महान अर्थशास्त्री आचार्य कौटिल्य विश्वविख्यात ख्याति प्राप्त वैद्य जीवक, महान् भाषा वैज्ञानिक एवं वैयाकरण महर्षि पाणिनि और महाभाष्य के प्रसिद्ध लेखक और विश्व विख्यात योग आचार्य महर्षि पतंजलि यहाँ से शिक्षा प्राप्त करके अपने-अपने क्षेत्र में प्रसिद्ध हुए। काशीनगर के बंधुलमल्ल तथा वैशाली के महालोनायक शासकों ने भी तक्षशिला में शिक्षा प्राप्त की थी।[30]

4. राजगृह, चम्बा, मिथिला, उज्जयिनी तथा पाटलिपुत्र से विद्यार्थी यहाँ ज्ञान गरिमा से परिचित होने आते थे।[31]

5. तक्षशिला में मुख्यतः उच्च-शिक्षा दी जाती थी। यहाँ शिक्षा का आधार परिवार प्रणाली थी। यहाँ जगत विख्यात 'दिशापामोक्ख' विद्वान् रहते थे।[32] इन

www.ignited.in

विद्वानों की कीर्ति से आकृष्ट होकर ज्ञान पिपासु विद्यार्थियों का यहाँ आगमन रहता था। तक्षशिला विश्वविद्यालय की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य स्वांतः सुखाय था न कि कोई उपाधि प्राप्त करना।[33]

6. जातककाल में यह विश्वविद्यालय उन्नति की पराकाष्ठा प्राप्त कर चुका था। हिंदू और बौद्ध दोनों ही धर्म पर आधारित उच्च शिक्षा प्राप्त करने की अति उत्कृष्ट संस्था का रूप धारण कर चुका था। इसकी ख्याति अफगानिस्तान, सीरिया, फ्रांस, तथा यूनान तक थी। वस्तुतः तक्षशिला मात्र एक विश्वविद्यालय ही नहीं भारत की बौद्धिकी राजधानी थी।[34]

7. तीसरी शताब्दी तक तक्षशिला एक शिक्षा के क्षेत्र में पर्याप्त प्रगति कर चुका था। इसका ह्रास काल नागर - वाकाटक जातियों के आगमन से प्रारंभ हुआ। सातवीं शताब्दी में व्हेनसांग जब भारत आया तो उसने तक्षशिला के बारे में कोई वर्णन नहीं किया वह इस विश्वविद्यालय के बारे में मौन है। उसने कश्मीर का वर्णन करते हुए लिखा है कि इसी के अंतर्गत तक्षशिला नगर भी था।[35] संभवतः हूणों के आक्रमण और उनकी बर्बरता ने पाँचवीं शताब्दी में इस ज्ञान केंद्र को सदा के लिए मिट्टी में मिला दिया।[36]

8. तक्षशिला विश्वविद्यालय के बार में अधिकतम जानकारी जातक कथाओं से ज्ञात होती है। जातक में ब्रह्मदत्त नामक एक राजकुमार की उच्च-शिक्षा का वर्णन है।[37] इसका उदाहरण सहित वर्णन गत पृष्ठों में हो चुका है।

9. तक्षशिला विश्वविद्यालय के द्वारा उच्च प्रशासक वर्ग और जन सामान्य दोनों के लिए खुले थे।[38] मिलिंद पन्हो में नागसेन नामक एक ब्राह्मण की शिक्षा के वर्णन का उल्लेख है। जिससे स्पष्ट होता है कि तत्कालीन भारतीय शैक्षिक व्यवस्था में हिंदू और बौद्ध दोनों प्रकार की शिक्षा प्रदान की जाती थी।[39]

10. तक्षशिला में केवल वही विद्यार्थी अध्ययन करने आते थे जिनका लक्ष्य ज्ञान कि किसी एक शाखा में विशेष योग्यता प्राप्त करना था।

जीवक यहाँ पर चिकित्सा शास्त्र की शिक्षा प्राप्त करने आया था। उसने यहाँ 7 वर्ष तक अध्ययन किया।[40]

निष्कर्ष:-

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि प्राचीन काल में तक्षशिला भारत का मुख्य उच्च शिक्षा केंद्र था। अनेक विश्वविद्यालय के आचार्य वहाँ निवास करते थे। उनके ज्ञान और यश से आकृष्ट होकर हजारों विद्यार्थी दूर से आते थे। यह विश्वविद्यालय तत्कालीन विभिन्न जनपदों के विद्यार्थियों से सदा परिपूर्ण रहता था। त्रयी (वेद), आन्वीक्षिकी (दर्शनशास्त्र), दंड नीति, वार्ता (कृषि, पशुपालन और वाणिज्य), शिल्प, आयुर्वेद, कला, शस्त्र संचालन आदि समस्त विद्याओं के अध्ययन-अध्यापन का तक्षशिला में समुचित प्रबंध था।तब तक किसी विद्यार्थी की शिक्षा उस युग में पूर्ण नहीं समझी जाती थी जब तक वह तक्षशिला जाकर वहाँ के विश्वविख्यात आचार्यो से विद्या प्राप्त न कर लेता था।

निष्कर्षरूपेण कहा जा सकता है कि निश्चय ही तक्षशिला विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा केंद्र के रूप में वर्तमान विश्वविद्यालय के समकक्ष था। वर्तमान में उच्च शिक्षा के अंतर्गत किसी विषय में जो विशेष अध्ययन कराए जाने का प्रावधान है वैसे ही तत्कालीन तक्षशिला के लिए विद्यालय में विभिन्न विषयों के विशिष्ट अध्ययन की समुचित व्यवस्था थी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पाण्डेय डॉ. रामशक्ल: प्राचीन भारत के शिक्षा मनीषी, पृ. सं.-94
2. ऐतरेय ब्राह्मण, 7/34
3. शतपथ ब्राह्मण, 8/4/10
4. पाण्डेय डॉ. रामशक्ल: प्राचीन भारत के शिक्षा मनीषी, पृ. सं.-95
5. कौशीतकी ब्राह्मण, 7/6
6. पाण्डेय डॉ. रामशुक्ल: प्राचीन भारत के शिक्षा मनीषी, पृ. सं.-96
7. जातक: फ़ॉसबॉल प्रथम, पृ0 सं0-239, 317, 402 तृतीय, पृ. सं.-18, 235
8. हत्थिसुत, 2, 47 जातक, 2, 200, 3, 415, 3, 219 आदि

www.ignited.in

9. मिश्र जयशंकर: प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास

10. तोमर लज्जाराम: प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति, पृ. सं.-108

11. तोमर लज्जाराम: प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति, पृ. सं.-109

12. दीपांकर आचार्य: कौटिल्य कालीन भारत, पृ. सं.-44

13. दीपांकर आचार्य: कौटिल्य कालीन भारत, पृ. सं.-43

14. दीपांकर आचार्य: कौटिल्य कालीन भारत, पृ. सं.-43

15. ओम प्रकाश: प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास, पृ. सं.-344 जातक, 5, 130, 185

16. अल्तेकर डॉ. ए0 एस0: प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति, पृ. सं.-81, 109

17. तोमर लज्जाराम: प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति, पृ. सं.-110

18. अल्तेकर डॉ. ए0 एस0: प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति, पृ. सं.-103

19. तोमर लज्जाराम: प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति, पृ. सं.-111

20. वशिष्ठ देवेन्द्र कुमार: भारतीय शिक्षा का इतिहास, पृ. सं.-54

21. अल्तेकर डॉ. ए0 एस0: प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति, पृ. सं.-82

22. तोमर लज्जाराम: प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति, पृ. सं.-109

23. तोमर लज्जाराम: प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति, पृ. सं.-109

24. दीपांकर आचार्य: कौटिल्य कालीन भारत, पृ. सं.-43

25. कनिंघम: The Ancient Geog of India

26. गुप्त नत्थूलाल: शिक्षा का सांस्कृतिक इतिहास, पृ. सं.-123

27. मार्शल सर जॉन: A Guide to Taxila, page No-3,16-18

28. एस0 आर0 डोंगर केरी: The University Education in India, Page No. 2

29. मिश्र जयशंकर: प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास, पृ. सं.-563

30. मिश्र जयशंकर: प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास, पृ. सं.-563

31. मिश्र जयशंकर: प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास, पृ. सं.-563

32. गोयल डॉ. प्रीति प्रभा: भारतीय संस्कृति, पृ0 सं.-122

33. मिश्र जयशंकर: प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास, पृ. सं.-563

34. भुवनेश्वर प्रसाद: भारतीय शिक्षा का इतिहास, पृ. सं.-135

35. पाण्डेय डॉ. रामशक्ल: प्राचीन भारत के शिक्षा मनीषी, पृ. सं.-94-95

36. जैन डॉ. हुकुमचन्द: ऐतिहासिक स्थल, पृ. सं.-103

37. मुखर्जी डॉ. आर. के.: Education in Ancient India, Page No. 477-478 जातक संख्या, 252

38. जैन डॉ. हुकुमचन्द: ऐतिहासिक स्थल, पृ. सं.-104

39. भुवनेश्वर प्रसाद: भारतीय शिक्षा का इतिहास, पृ. सं.-133

40. अल्तेकर डॉ. ए0 एस0: प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति, पृ. सं.-85

Corresponding Author

Shashi Bala Kulshreshtha*

Research Scholar, Singhania University, Rajasthan

shivanisk1983@gmail.com

www.ignited.in